सल्तनत कालीन समाज पर एक विहंगम दृष्टि

भारत के भूखण्ड़ पर विभिन्न आक्रमणकारियों का हमला शुरू से ही होता रहा है, धूल उड़ाते घोड़े, तलवारबाजी करते योद्धा, एवं सैनिक गण न जाने कितने भारतीयों के सिर काट डालें। इन आक्रमणकारियों में यूनानी, हूण, बैक्ट्रियन, पर्सियन आदि प्रमुख थे। जब भारतवर्ष में मुस्लमानों का आक्रमण एवं आगमन शुरू हुआ तो वे उपरोक्त आक्रमणकारियों की तरह यहाँ के समाज और संस्कृति में विलिन नहीं हो पाये।

मुस्लमानों का अलग घर्म, अलग संस्कृति, अलग समाज, खान–पान सबकुछ अलग था वे भारतीय समाज के वर्गो में सम्मिलित होना नहीं चाहते थे।

बल्कि उनकी चाहत थी कि मूर्तिपूजक हिन्दुओं को नष्टकर दिया जाय। इस कार्य में वे, काफी आगें रहें। उनकी तलवारों में हिन्दुओं के रक्त से सने समाज को खोखला बना रहा था।

यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात थी कि मुस्लमानों में भी जातिगत बैमनस्यता थी। इनमें शिया और सुन्नी दो भागों में विभाजित थे।

मुस्लमानों में वर्ग विभाजन भारतवर्ष में आने के बाद हिन्दुओं से मुस्लमान अपने को पृथक समझने लगे इसका अपना अलग वर्ग विभाजन हो गया।

प्रथम वर्ग– में शेख, सैयद, मुगल, पठान, खान मल्लिक आदि आ गये।

दुसरे वर्ग में– मुस्लमानों में उलेमा, सुफी सैयद आदि थे जिनका मुस्लिम समाज में काफी आदर था उन्हें राज्य की ओर से विशेषाधिकार दिया गया था। उलेमा लोग विद्वान और राजनीति में प्रमुख स्थान रखते थे। सुल्तान पर भी इसका अधिकार होता था। धीरे–धीरे कालान्तर में अल्लाउद्दीन खिलजी ने उलेमाओं को घातक समझकर शासन से दूर रखा।

मध्यम वर्ग का अभाव– बड़े ही आश्चर्य की बात है कि सल्तनत काल में मध्यम वर्ग नहीं था प्रारम्भ में तो मुस्लमान बड़े ही परिश्रमी उत्साही, धर्मशील और चरित्रवान थे।

कालान्तर में मुस्लिम वर्ग का पतन होने लगा मद्यपान और दुराचारी_हो गये इनके समाज में सबसे खराब दशा स्त्रियों की थी स्त्रियाँ मुस्लमानों के भोग की शिकार बनती थी। उनके हरम में अनेक स्त्रियाँ रहती थी तलाक की प्रथा और वैवाहिक सम्बन्ध भी आम बात थी। मुस्लमानों में बहुविवाह का प्रचलन सबसे अधिक था स्त्रियों को पर्दे में रहना पड़ता था। बूर्का पहनना अनिवार्य था।

मुस्लिम स्त्रियों की सामाजिक विभिन्नता जटिल थी वे एक ही हरम में जानवारों जैसे रहती थी। न तो सामाजिक स्वतन्त्रता और न ही बोलने की स्वतन्त्रता थी तथा न तो सामाजिक महोत्सव में भाग ले सकती थी। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा से दूर थी। कुराण पढ़ना या सामूहिक नमाज अदाकरना भी कठिन काम था इतना ही नहीं मस्ज्जिद में सामुहिक नमाज नहीं पढ़ सकती थी। औरतों पर मुस्लिम समाज कई प्रतिबंध लगा रखे थे।

लगभग 900 नौ सौ वर्शो के बाद भारतवर्श वर्तमान लोकतांत्रिक सरकार ने मुस्लिम स्त्रियों को स्वतन्त्रता प्रदान किया तीन तलाक की प्रथा को गैर कानूनी बताया गया इससे मुस्लिम औरतों में खुशियों छा गई अब मुस्लिम औरते और लड़कियाँ उच्च शिक्षा हासिल कर रही है। डॉ. इंजिनयर, प्राध्यापक तथा विभिन्न पदों पर मुस्लिम औरतें आसिन है।

हिन्दु समाज की ओर

सल्तनत काल में हिन्दुओं की संख्या लगभग 95ः थी परन्तु उनकी सामाजिक स्थिति दयनीय थी इतिहासकार वरनी ने'' हिन्दुओं को चौधरी कुत मुकद्यम के नामों से संबोधित किया। लगभग 350 वर्शा के सल्तनत काल में हिन्दुओं की स्थिति बद से बदत्तर हो गई'' इतिहासकार वरनी ने तारिखे–फिरोजशाही में लिखा है। ''अल्लाउद्दीन के शसन काल में कोई भी हिन्दू सिर उठाकर नहीं चल सकता था उनके घरों में सोना, चाँदी दिखाने के लिए भी नहीं था अपनी गरीबी के कारण वे न तो घोड़े पर चढ़ सकते थे तथा न ही पान चबा सकते थे''।[1] ''अल्लाउद्दीन खिलजी ने हिन्दुओं के समाज में भीषण अत्याचार किये वरनी ने लिखा है'' कि हिन्दु करदाता है यानी कर वसुलने वाला कोई अधिकारी उनके मुख पर थूँकना चाहे तो उन्हें बड़ी खुशी से उनके समुख अपना मुँह खोल देना चाहिए।''[2]

ब्राहम्णों पर उसने कठोर अत्याचारी किये दिल्ली के एक ब्राहम्ण परिवार को उसने इसलिए जला दिया क्योकि उसके प्रभावों में आकर कुछ मुस्लिम स्त्रियाँ हिन्दू हो गई थी'। तुगलक काल में एक हिन्दू को राजस्व पदाधिकारी का पद दिया गया था परन्तु षड़यंत्र कर उसे मार दिया गया। हिन्दुओं की तत्कालीन सामाजिक स्थिति अत्यंत गभीर हो चुकी थी। इतिहासकार कुरैशी ने लिखा है। ''कि यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि मुस्लिम राज्य में प्राचीन भारत की तुलना में हिन्दुओं की स्थिति अच्छी नहीं थी''[3]

सल्तनतकाल का भोजन –

हिन्दू और मुस्लमान दोनो ही वर्गो में साधारण ही स्थिति वालों मनुष्यों में इतनी क्षमता नहीं थी कि उत्तम भोजन कर सके। या अच्छा जीवन निर्वाह कर सके खिचड़ी इस वर्ग का प्रमुख भोजन था। इस काल में दक्षिण भारत के लोग चावल खाते थे। मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग के लोग रोटी और चावल तथा विभिन्न प्रकार के सब्जियाँ और दाल खाते थे। मुस्लिम समाज में गोश्त खाने का प्रचलन था। भेड़–बकरे, पंक्षियों के मांस खाते थे, मुस्लिम समाज में गोष्त को स्वादिष्ट बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के मसालों का प्रयोग किया करते थे।

मांस मछली के अलावे मुस्लमानों में काई भी ऐसा वर्ग नहीं था जो मदिरा का सेवन न करता हो मद्यपान का प्रचलन, फैशन, और विलासिता के रूप में जाने जाता था। तम्बाकु का प्रयोग सल्तनत काल में नही होता था। अल्लाउद्दीन न ही एक ऐसा शासक था जिसने मद्यपान पर रोक लगाया।

वस्त्र और आभूषण

तात्कालिन सामाजिक व्यवस्था में वस्त्र और आभूषण का उल्लेखनीय महत्व है। उस समय क सुल्तान सिर पर कुल्हा तथा लंबा तार–तार टोपी पहनते थे। उस काल के मुस्लिम काबा भी पहनते थे जो मलमल और उन का बना होता था आगे चलकर पेशवाज तथा अंगरखे का भी प्रचलन हो गया सर्दी में कुर्ता के उपर कभी–कभी दगला भी धारण करते थे।

सल्तनत काल में स्त्री और पुरूष दोनों श्रृंगार के प्रेमी थे। स्त्रियाँ आँखों में काजल, मांग में सिंदुर, हाथों में मेहंदी लगाती थी शिष, नाक, कान, भूजा और उँगली में तरह–तरह के आभूषण धारण करते थे।

मनोरंजन

सल्तनत काल के समाज में चौगान प्रमुख खेल था जिसे आज के समय में पोलो कहते है।
इसके अतिरिक्त शतरंज के खेल सबसे लोक–प्रिय खेल था।

महिला समाज

सल्तनत काल में महिलाओं के स्थिति पुरूषों के अपेक्षा निचले स्तर की थी। स्त्रियों को पति की सेवा और घर की सेवा करती थी स्त्रियों को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं थी। कहा जाता है कि बचपन में माता–पिता, युवास्था में पति तथा वृद्धावस्था में

पुत्रों के अधिन थी। मुस्लिम परिवार में उसकी स्थिति और भी वद्यत्तर थी मुस्लमान स्त्रियाँ पति पर निर्भर रहती थी किसी दूसरे से बात नहीं कर सकती थी।

विवाह

सल्तनत काल में विवाह उच्च वर्ग के मुसलमानों में वहु विवाह का प्रचलन था कुराण के अनुसार पुरूष चार पत्नियों का अधिकारी होता था, परन्तु निम्न वर्ग के हिन्दू और मुस्लमान में अधिकत्तर एक विवाह का प्रचलन था।

Delia Vaille का कथन है ''हिन्दू केवल एक स्त्री से ही विवाह करता था और उसके चरित्रहीन होने के अतिरिक्त कभी भी जीवनपर्यन्त तलाक नही देता था।''[4] हिन्दू में विधवा विवाह नहीं होता था विधवा अपने पति के साथ सती हो जाती थी।

सतीप्रथा

हिन्दुओं के उच्च वर्गो में सती प्रथा का प्रमुख स्थान था। इब्न बतूता ने लिखा है'' पति के मुत्यू के बाद अपने आपकों जला डालना बड़ा ही प्रशांसनीय कार्य समझ जाता था परन्तु अनिवार्य नहीं था जब कोई विधवा अपने आपको जला डालती थी तो उस घर का सम्मान बढ़ जाता था जो विधवा स्वयं अपने षरीर को नहीं जलाती उसे पिले वस्त्र धारण करनी पड़ती थी तथा उसका जीवन बड़ी कष्टमय से बितता था।''[5]

दुसरे बात यह है कि किसी स्त्री को सती होने से पूर्व सुल्तान से आज्ञा लेनी पड़ती थी।

जौहर प्रथा

जौहर अधिकांश स्त्रियों राजपूत धराने के लोग करती थी। जब रण भूमि में राजपूतों का न्यौछावर हो जाती थी तब राजपूत स्त्रियाँ शत्रु के हाथों में न पड़ना और न अपमानित होना पड़े इसके लिए जौहर कर लेती थी।

पर्दाप्रथा

सल्तनत कालीन समाज में पर्दाप्रथा औरतो में सीमा पार कर चुकी थी। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि सल्तनक काल से ही रजिया बेगम इस प्रथा की अवेहलना की'' फिरोजशाहतुलगक ने तो आगे चलकर मुस्लिम स्त्रियों को दरगाहों के दर्शन हेतू जाने के लिए रोक लगा दिया।''[6]

उच्च धराने की औरते पालकियों में चलती थी। निम्नवर्ग की औरतें बुर्के से ढकी रहती थी हिन्दू स्त्रियों को अपहरण का भय बना रहता था इसलिए मुख पर पल्ला चढ़ाकर चलती थी। इस काल मे बाल विवाह का भी प्रचलन था क्योकि सुंदर कन्याओं को देखते ही मुस्लिम सरदार उठाकर ले जाते थे।

शिक्षा की ओर

इस युग में षिक्षा बहुत पिछड़ी हुआ था शिक्षा उच्च धराने तक ही सीमित थी। उच्च धरानों में नृत्य और संगीत की शिक्षा दी जाती थी। देवलरानी रूपवती इस युग की विदुशी महिला थी। यहाँ तक की रजिया बेगम एक कुशल प्रशासिका थी। इब्नवतुता ने लिखा है'' जब हनौल पहुँचा तो उसे विद्यालय लड़कियों के मिले।''[7]

निष्कर्श तो यह है कि सल्तनत काल का समाज कुल मिलाकर अत्यंत दुषित था सामाजिक वैमनस्यता, स्त्रियों पर अत्याचार शिक्षा का पिछड़ापन तथा सामाजिक एकता का अभाव एवं दुर्गुण से भरा हुआ समाज था।